अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय-पंचम्
शोध सारांश, निष्कर्ष और सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

राष्ट्र की उन्नति अनेक घटकों पर निर्भर करती है। इन घटकों में शिक्षा का अपना विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण शिक्षा उद्देश्यपरक और उपयोगी होना आवश्यक है तथा समयानुसार उसमें परिवर्तन होना आव यक है।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। बालक के सर्वांगीण विकास में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है। यही कारण है, कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्ता का स्तर बढ़ाने के लिए न्यूनतम अधिगम स्तर के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे भाषा सम्बन्धी, खासकर मातृभाषा सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान प्राप्त करते समय उनके अधिगम में अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ आती है, जिसके कारण उनका मातृभाषा का ज्ञान भी अशुद्धियुक्त बनता है। कुछ विद्यार्थी तो प्रभावपूर्ण ढंग से अपने विचार व्यक्त करते हैं लेकिन कुछ विद्यार्थी उसमें दक्षता स्तर तक नहीं पहुंचते। उनकी मातृभाषा का अनुच्छेद लिखने को या कहानी लिखने को कहा जाए तो उसमें वह अनेक प्रकार की लेखन सम्बन्धी अशुद्धियाँ करते हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य लेखन अशुद्धियाँ जानने और निराकरणीय सुझाव देने के उद्देश्य से किया गया है। विद्यार्थियों के लेखन की अशुद्धियाँ जानकर उनको लेखन में दक्ष बनाने के लिए इस अध्ययन का महत्व बढ़ जाता है।

प्राथमिक स्तर पर ही इन अशुद्धियों का निराकरण अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते समय उसको हिन्दी राष्ट्रभाषा और अंग्रेजी भाषा सहित बाकी के विशय भी पढ़ने होते हैं। अगर उसका मातृभाषा का ज्ञान कम है, तो वह बाकी भाषा में भी कमजोरी महसूस करेगा। इन सब परिणामों को हटाने के लिए यह मातृभाषा हिन्दी के विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा लेखन की अशुद्धियों का अध्ययन करने की आवश्यकता अधिक बढ़ गई है।

सारांश, किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त और सरल रूप से समझा जा सके। इस अध्याय में लघुशोध का सारांश एवं अध्याय चतुर्थ में दिए गए प्रदत्तों के वि लेशण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ अध्ययन के आगे सम्बन्धित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

5.2 समस्या कथन :–

कक्षा छठवीं के हिन्दी भाशी विद्यार्थियों के हिन्दी भाशा लेखन की अशुद्धियों का अध्ययन एवं सुझाव।

5.3 शोधकार्य के उद्देश्यः–

1. कक्षा छठवीं के हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा लेखन की अशुद्धियों का अध्ययन करना।
2. कक्षा छठवी के हिन्दी भाषी छात्र एवं छात्राओं के हिन्दी भाषा लेख की अशुद्धियों का अध्ययन करना।?
3. कक्षा छठवीं के शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा लेखन की अशुद्धियों का अध्ययन करना।
4. कक्षा छठवीं के हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा लेखन की अशुद्धियों के कारणों को जानना।
5. कक्षा छठवीं के हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा लेखन की अशुद्धियों के निराकरण हेतु सुझाव देना।

5.4 उपकरण और विधि :–

शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का शोधकार्य के लिए चयन किया। शोधकर्ता ने कक्षा छठवीं के हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा लेखन की अशुद्धियों का अध्ययन के लिए लेखन कौशल के आधार पर स्वयं हिन्दी भाषा विषयक नैंदानिक परीक्षण पत्र का निर्माण किया और कारणों के अध्ययन हेतु भी अपठित गद्यांश

बनाये। जिनका लेखन की मात्रा, विरामचिन्ह, संयुक्ताक्षर, शब्द, वर्ण, अनुच्छेद रचना की अशुद्धियॉ और कारण जान सके इसलिए चयन किया।

5.5 निष्कर्ष :–

उद्देश्य एक के अनुसारः–

कक्षा छठवीं के हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लेखन कौशल परीक्षण से यह पाया गया कि जल्दबाजी लापरवाही तथा नियमित लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव करते हैं और कई प्रकार की जैसे–मात्रा, विरामचिन्हों, बिन्दु, संयुक्ताक्षर, वर्ण, शब्द, अनुच्छेद रचना आदि सम्बन्धी अशुद्धियॉ करते हैं।

लेखन की अशुद्धियों के कारणों के परिक्षण के अनुसारः–

1. विद्यार्थियों को हिन्दी की शुद्ध वर्तनीरूप व्याकरण के नियमों की जानकारी न होने कारण लेखन में अशुद्धियों हुई।
2. विद्याथियों के लेखन की अशुद्धियों पर शिक्षक के पढ़ने के ढंग का भी असर होता है, क्योंकि शिक्षक के उच्चारण की अस्पष्टता, आवाज, छोटा, आरोह–अवरोह आदि के कारण भी अशुद्धियॉ होती हैं।
3. जिन विद्यार्थियों की अधिक अशुद्धियॉ पायी गयी, उनमें से कुछ विद्यार्थियों को लिखने का कार्य अच्छा नहीं लगता तो कुछ लड़के ठीक से सुनाई न देने के कारण अशुद्धियॉ कर बैठे यह पाया गया।
4. विद्यार्थियों के लेखन में अशुद्धियों के कारणों में एक कारण यह है, कि विद्यार्थी पढ़ाई में अच्छी तरह ध्यान नहीं देते, इसीलिए अशुद्धियॉ करते हैं।
5. विद्यार्थियों को गृहकार्य देकर उनको प्रबलन आदि न देकर उनको सजा देने के कारण भी डर से विद्यार्थी जल्दबाजी में लिखते हैं, तो अशुद्धियॉ होती है यह भी एक कारण निकाला गया।
6. विद्यार्थियों की मात्राओं में अंतर न जानने के कारण मात्राओं सम्बन्धी अशुद्धियों का अधिक प्रमाण पाया गया।

5.6 सुझाव :–

उपर्युक्त निष्कर्ष एवं परिणामों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा लेखन की अशुद्धियों के निवारण के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं।

- **छात्र–छात्राओं को सुझावः–**
  1. अध्ययन में आने वाली समस्या निसंकोच शिक्षक को बताना चाहिए।
  2. शाला में दिया हुआ गृहकार्य नियमित रूप से करना चाहिए ताकि लेखन कौशल का विकास हो सके।
  3. शाला में शिक्षक को गैरहाजरी में खाली समय में किसी अच्छे पाठ का क्रमशः वाचन व लेखन करना चाहिए।
  4. भिन्न भिन्न प्रकार की स्पर्धाओं में हिस्सा लेना चाहिए ताकि लेखन, पाठन आदि कौशलों का विकास हो सके।

- **शिक्षकों को सुझावः–**
  1. शिक्षकों को हिन्दी भाषा पढ़ाते समय पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु पर नहीं बल्कि, भाषा के कौशलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
  2. लेखन से सम्बन्धित गृहकार्य देना चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थियों के उत्तरपुस्तिका में वर्तनी की अशुद्धियों की जांच करनी चाहिए तथा अंकों को शब्दों में लिखकर अभ्यास करवाना चाहिए।
  3. ऐंसे क्रियाकलापों का आयोजन करना चाहिए, जिससे छात्र अपनी त्रुटियों को स्वयं दूर करने का प्रयास करें।
  4. उचित गति से योग्यता से पढ़ने–लिखने का अभ्यास करवाना चाहिए।
  5. कक्षा स्तर पर हिन्दी शुद्धलेखन पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

- **भावी शोध हेतु सुझावः–**

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल जे. सी. (1988); 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति', नई दिल्ली।
- कपिल एच. के.(1980); 'अनुसन्धान विधियॉ; आगरा, हरप्रसाद भार्गव प्रकाशन।
- कुमार राजेश (1989); 'त्रुटियॉ–विषलेशण और सुधार'; दिल्ली, अनुभव प्रकाशन।
- गैरेट एच. ई.(1978);'शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी'; नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।
- बुच. एम. बी.(1978–83); 'थर्ड सर्व ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन'; नई दिल्ली, एन. सी.ई.आर.टी.।
- बुच. एम. बी.(1988–92); 'फिप्थ सर्व ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन'; नई दिल्ली, एन. सी.ई.आर.टी.।
- ब्रिटेन जेम्स(2006); 'भाषा और अधिगम'; दिल्ली, ग्रंथ शिल्पी प्रा. लिमिटेड।
- भारतीय आधुनिक शिक्षा (2002); दिल्ली, एन. सी.ई.आर.टी.।
- राय पारसनाथ (2003); 'शिक्षा अनुसंधान'; आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005); दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी.।
- वर्मा ब्रजे वरी (1973);' भाषा शिक्षण तथा भाशा विज्ञान'; आगरा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान।
- श्रीवास्तव आर. (1992); 'भाषा शिक्षण'; नई दिल्ली, वीणा प्रकाशन।
- श्रीवास्तव रविन्द्रनाथ (1979); 'भाषा शिक्षण'; नई दिल्ली, भाशा तथा भाशिकी सिरीज।
- श्रीवास्तव डी. एन. (1998); 'अनुसन्धान विधियॉ; आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

अपठित गद्यांश नं. 01

(अ) बैशाखी का त्यौहार संपूर्ण पंजाब में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस दिन लोग नदियों तथा सरोवरों में स्नान करते हैं। नई फसल आने के कारण किसानों में अत्यंत हर्षोल्लास होता है। किसान भांगड़ा नृत्य करके अपनी खुशी प्रकट करते हैं। भारतीय पंचांग (पत्रा) के अनुसार इस दिन नव वर्ष का शुभारंभ माना जाता है। इस दिन कोई भी नया कार्य शुरू करना विशेष शुभ माना जाता है।

अपठित गद्यांश नं. 02

(ग) एक बार पशुओं ने मिलकर एक सभा की, सभा में बाज पक्षी ने कहा–"मैं पक्षियों का राजा हूँ क्योंकि मैं सबसे अधिक उड़ सकता हूँ।" इसके बाद काली चिड़िया ने कहा – "सबसे अधिक मैं उड़ सकती हूँ न कि कोई दूसरा। "पक्षियों ने निश्चय किया कि दोनों पक्षी सिर पर कुछ रखकर उड़ेंगें।

बाज चतुर था, वह सिर पर रूई रखकर उड़ने लगा और काली चिड़िया सिर पर नमक। वे दोनों उड़ने लगे। पक्षियों ने विचार किया कि कुछ समय बाद काली चिड़िया हार जाएगी, जीत की माला बाज के गले में पड़ेगी।

उसी समय वर्षा आरंभ हो गई। उसके सिर पर जो रूई थी, वह वर्षा की बूंदों से जल्दी गीली हो गई। चिड़िया के सिर पर जो नमक का बोझ हल्का होने लगा। काली चिड़िया जल्दी उड़ने लगी, वह पार पहुँच गई। पक्षियों ने तालियॉ बजाकर उसका अभिनंदन किया।